

प्रबकोटसंकटतट Spr. (II) 3311. भूतसंकटः श्मशानवाटः MĀLATIM. 77, 20. वनानि *dicht* R. 4, 47, 3. KĀM. NITIS. 7, 37. — b) *schwierig, worüber man nicht leicht hinüberkommt* (in übertr. Bed.): प्रभ्रः सुसंकटः MBH. 12, 11181. धर्मश्चातुराश्रम्यसंकटः 12284. संसारचक्र MĀRK. P. 10, 26. 45, 5 (अति<sup>०</sup>). युद्धं परमसंकटम् so v. a. *überaus gefährlich* MBH. 7, 3086. — 2) m. N. pr. a) *eine Personification der schwierigen Durchgänge* als Sohn Kakubh's BHĀG. P. 6, 6, 6. — b) *eines Mannes RĀGA-TAR. 5, 241.* — c) *eines Flamingo KATHĀS. 60, 169. PAÑKĀT. 76, 7. HIT. 110, 2, v. l. — 3) f. स्त्री N. pr. einer der acht Jogini ĠJORISHA im ÇKDR. einer in Benares verehrten Göttin ÇKDR. °स्तोत्र Verz. d. Pet. H. No. 51. — 4) n. a) Enge, ein beengter Raum, ein schmaler Pfad, ein schwieriger Durchgang MBH. 3, 2930. 11, 143. Spr. (II) 3372. MRĀKH. 50, 18. RĀGA-TAR. 4, 363. KULL. zu M. 8, 295. गिरि<sup>०</sup> R. 4, 49, 29. पर्वत<sup>०</sup> Spr. (II) 3933, v. l. रथ<sup>०</sup> KULL. zu M. 8, 296. वनसंघ<sup>०</sup> R. 3, 20, 38. वृत्तसंकटज्ञा दोषाः KĀM. NITIS. 14, 21. द्रुम<sup>०</sup> 15, 12. विषमशिला<sup>०</sup> Spr. (II) 3310. मुच्येत योनिंसंकटात् so v. a. *Wiedergeburt* MBH. 3, 8073. मार्गाः संसंकटाः LĀ. (III) 87, 9. कङ्कटस्या-तिसंकटे *ausserordentliche Dichtigkeit* RĀGA-TAR. 6, 249. — b) *Schwierigkeit; eine schwierige Lage, Verlegenheit, Noth, Gefahr: यथा यथेदं नि-पुणां विचार्यते तथा तथा संकटमेव दृश्यते MRĀKH. 149, 2. °नाशन KĀM. NITIS. 18, 3. संकटे ऽस्मिन् KATHĀS. 6, 152. 18, 341 (pl.). 27, 179. संकटे हि परीक्ष्यते प्राज्ञाः प्रूराश्च संगरे 31, 93. 35, 52. 49, 72. 50, 27. SĀH. D. 492. यथत्र संकटं ज्ञातुं युवयोः स्यात् KATHĀS. 42, 82. 36, 28. द्वैपय्याः MBH. 3, 15537. स्वानाम् BHĀG. P. 9, 18, 29. प्राणस्य 8, 2, 30. नाधिगच्छामि संकटम् MBH. 2, 2376. संकटं मद्ददातम् MĀRK. P. 61, 29. 75, 58. 76, 26. 31. °स्य KATHĀS. 119, 69. संकटं प्राप्तः MĀRK. P. 62, 28. 126, 30. संकटं मद्ददास्थितः 70, 26. संकटे पतितः स्मः NĀGĀN. 24, 1. निपत्य संकटे RĀGA-TAR. 6, 349. तस्मान्मुच्यस्व संकटात् MBH. 3, 15965. 7, 8920. MĀLAV. 58, 9. KATHĀS. 104, 157. MĀRK. P. 92, 28. RĀGA-TAR. 6, 352. Verz. d. Oxf. H. 88, b, 12. 34. संकटाडुद्धर्तुम् MBH. 3, 15536. येनास्मान्निस्तरिष्यामः संकटात् KATHĀS. 49, 73. संकटात्तीर्णं 86, 128. स वै नः संकटाद्विता BHĀG. P. 8, 24, 43. in comp. α) mit dem, was in Gefahr steht: पर<sup>०</sup> 6, 10, 6. 12, 5. प्राण<sup>०</sup> 8, 19, 43. स्वस्वामिगृह<sup>०</sup> KATHĀS. 119, 67. धर्म<sup>०</sup> MBH. 11, 150. R. GORR. 2, 18, 43. BHĀG. P. 9, 4, 38. शब्दार्थन्यायसंकटेषु DURGĀ bei Muir, ST. 2, 184. — β) mit dem, was Gefahr bringt: शस्त्र<sup>०</sup> MBH. 7, 7370. शत्रु<sup>०</sup> 4, 209. Spr. (II) 1224. 3727. KATHĀS. 33, 119. 106, 145. भव<sup>०</sup> Verz. d. Oxf. H. 80, b, 37. अज्ञान<sup>०</sup> (so zu fassen) BHĀG. P. 3, 7, 7. — मूढ<sup>०</sup> Spr. (II) 4497. अति<sup>०</sup> 3170. MĀLATIM. 103, 19. MALLIN. zu KUMĀRAS. 3, 23. सु<sup>०</sup> BHĀG. P. 10, 88, 16. — सङ्कटाध्यम् MBH. 8, 3018 fehlerhaft für संकटात्मम्, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. प्राण<sup>०</sup>, वन<sup>०</sup>, वृत्त<sup>०</sup>.**

संकटचतुर्थी f. Bez. eines best. Festtages am 4ten Tage in der dunklen Hälfte des Çrāvāṇa Verz. d. Oxf. H. 284, b, 17.

संकटात् 1) adj. Seitenblicke (कटात्) werfend. — 2) m. Gristea tomentosa Roxb. H. an. 4, 323. VIÇVA im ÇKDR. — संकटात् MED. sh. 37. adj. = कटात्सहित; m. = बरान (?).

संकटिकं adj. von संकट gaṇa कुमुदादि zu P. 4, 2, 80.

संकटिन् desgl. gaṇa प्रेतादि zu P. 4, 2, 80. in einer schwierigen Lage sich befindend, in Verlegenheit seiend: वयं संकटिनो विप्र येषो पत्नी न वेस्मनि MĀRK. P. 72, 3.

संकथन (von कथय् mit सम्) n. das Sichunterhalten: बहूनां कलक्ते नित्यं द्वयोः संकथनं ध्रुवम् MBH. 12, 6652. तामिः EKĀDĀÇĪTATTVA im ÇKDR. ज्ञातिभिः सह Spr. (II) 6888.

संकथा (सम् + क<sup>०</sup> oder von कथय् mit सम्) f. gaṇa कथादि zu P. 4, 4, 102. 1) Unterredung, Gespräch H. 275. HALĀ. 4, 94. BHĀG. P. 10, 82, 17. प-पित्तैः सह Spr. (II) 1183. तत्कृतामुच्चैराकर्णयति संकथाम् KĀM. NITIS. 5, 36. विश्रम्भसंकथाः । कुर्वती मदिरावत्या सह vertrauliche KATHĀS. 104, 174. अनार्य<sup>०</sup> mit HARIV. 1026. अर्जुन<sup>०</sup> über MBH. 14, 2587. कथयन् — प्रियस्य पुत्रस्य विवाससंकथाम् R. GORR. 2, 66, 69. KĀM. NITIS. 15, 29. BHATT. 8, 103. सचिवैः सह संग्रामसंकथाः । तास्ताः कुर्वन् KATHĀS. 47, 95. 93, 5. सखीभिर्बद्धसंकथा adj. f. RĀGA-TAR. 3, 503. — 2) ein übereinstimmender Ausspruch: श्यायकवि<sup>०</sup> Verz. d. Oxf. H. 214, a, 6. — Vgl. सांकथिक.

संकर (von 3. कर् mit सम्) m. (im Epos hier und da auch n.). 1) Vermengung, Mischung, Vermischung VS. PRĀT. 1, 8. संकरेण च युध्येत्संकरः संकुलावहः KĀM. NITIS. 19, 26. SUÇR. 1, 109, 6. Verz. d. Oxf. H. 230, a, 9. SĀH. D. 264. KUSUM. 16, 18. 54, 3. SARVADARÇANAS. 53, 1. fg. 78, 20. सर्व-वस्तु<sup>०</sup> 13, 4. क्रिया<sup>०</sup> SUÇR. 1, 131, 6. VĀGBH. 1, 12, 67. रोषाश्रुर्क्षुभीत्यादेः PRATĀPAR. 56, a, 2. 59, a, 9. सर्ववर्षानाम् SUÇR. 1, 122, 15. M. 9, 67. वर्षाजः संकरः = वर्षासंकरः VARĀH. BRH. S. 89, 1. ज्ञाति<sup>०</sup> KATHĀS. 40, 10. गोत्र<sup>०</sup> MBH. 12, 11912. ब्राह्मण<sup>०</sup> 11911. धर्म<sup>०</sup> 11913. 13, 2371. 4341. R. 5, 14, 55 (शंकर gedr.). घ्राचार<sup>०</sup> R. SCHL. 1, 6, 17. am Ende eines adj. comp.: अमं-करेण धर्मेण MBH. 14, 2777. रक्षित<sup>०</sup> KATHĀS. 71, 270. ज्ञात<sup>०</sup> 80, 51. — 2) so v. a. वर्षासंकर Vermischung der Kasten durch unebenbürtige Ehen BHĀG. 1, 42. VARĀH. BRH. S. 9, 14. TATTVAS. 21. संकरे ज्ञातयः M. 10, 10. °ज्ञात 5, 89. °ञ Verz. d. Oxf. H. 277, b, 7. VARĀH. BRH. S. 16, 11. °ज्ञाति adj. BHĀG. P. 7, 11, 30. °भव adj. VARĀH. LAGHŪ. 2, 3. concret so v. a. Mischlings-kaste: संकरा वै सुराष्ट्राः MBH. 8, 2098. वर्षानां संकराः dass. HARIV. 11321. — 3) eine der Vermischung der Kasten gleichkommende Handlung: कथमेका बहूनां स्याद्धर्मपत्नी न संकरः MBH. 1, 7256. पापकर्मतया चैव संकरं तेन पृष्यति । संकरो नरकायैव 5, 2613. विमुच्यते चापि स सर्वसंकरैर्न चास्य दौषैरभिभूयते मनः ॥ 13, 5204. तिर्यग्योनिं न गच्छेच्च नरकं संकराणि च 7633. तस्याभावे (sc. धर्मस्य) तु लोका ऽयं संकरान्नाशमाप्नुयात् (Text und Comm. शङ्करात्, welches durch संकीर्णतया erklärt wird) KĀM. NITIS. 2, 33. — 4) Vermischung von Redefiguren, wobei die einzelnen Elemente in einander fließen (im Gegens. von संसृष्टि): तीरनीरन्यायायात्र संबन्धः स्यात्परस्परम् । अलंकृतीनामेतासां संकरः स उदाहृतः ॥ PRATĀPAR. 104, a, 8. SĀH. D. 755. 757. 5, 4, 5. — 5) was durch Berührung mit Unreinem unrein sein kann: विमर्शं संकरादाने नायं कुर्यात्कदा च न MBH. 1, 6371. — 6) Kehrlicht AK. 2, 2, 18. H. 1016. HALĀ. 2, 147. HĀR. 235. — 7) das Knistern des Feuers HĀR. — 8) N. pr. eines Mannes mit dem patron. Gautama Ind. St. 4, 374. eines Bhikshu TĀRAN. 72. — Vgl. योनि<sup>०</sup> (°ञ MBH. 3, 8172), लोक<sup>०</sup>, लोक<sup>०</sup>, वर्षा<sup>०</sup> und संकार.

संकरक (wie oben) adj. vermengend, vermischend: धर्म<sup>०</sup> MBH. 6, 3338 (°संकरकारिते ed. Bomb.).

संकरकृत्या f. = संकर 3) M. 11, 125. = संकरीकरणा KULL.

संकरता in वर्षा<sup>०</sup> nom. abstr. von वर्षासंकर. °तो गतः in eine Mischlingskaste gerathen MBH. 13, 6578.